उसके हिस्से की धूप

(काव्य संग्रह)

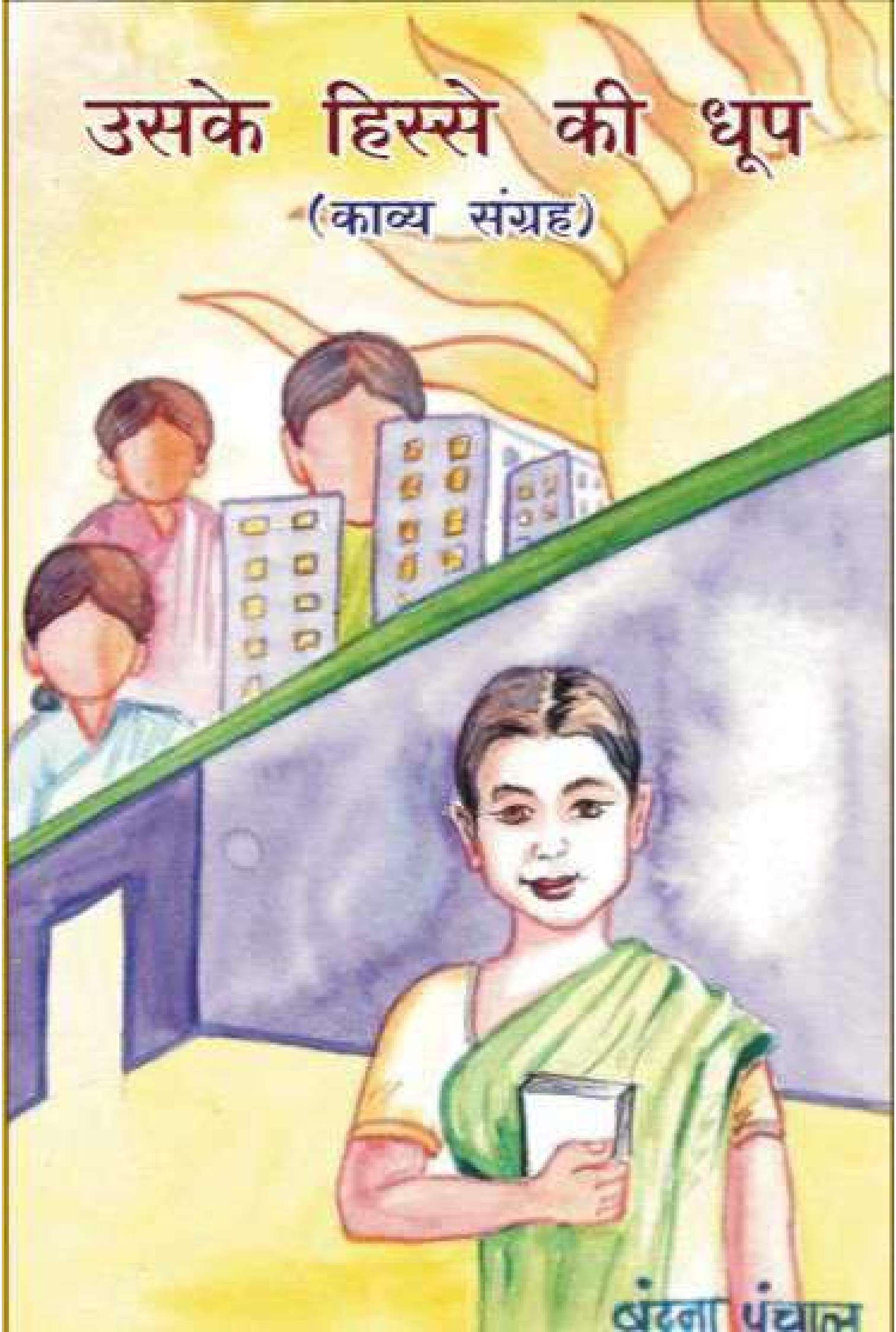

वंदना पंचाल

उसके हिस्से की धूप

बंदना पंचाल

प्रकाशक

साहित्य सेतु अकादमी ट्रस्ट

अहमदाबाद

हिन्दी साहित्य अकादमी, गुजरात, की आर्थिक सहायता से प्रकाशित

उसके हिस्से की धूप

© बंदना पंचाल

ISBN : 978-81-992015-7-6

मूल्य : 200

प्रथम संस्करण
31, अक्तुबर, 2025

प्रकाशक
साहित्य सेतु अकादमी ट्रस्ट
अहमदाबाद

टाइपसेटींग
स्टाइलस ग्राफिक्स
अहमदाबाद–380001

मुद्रक
साहित्य सेतु अकादमी ट्रस्ट
A–202, क्रिश लक्ज़ूरिया
वस्त्राल रोड, अहमदाबाद–382418
(मो.) 9427622862

समर्पण

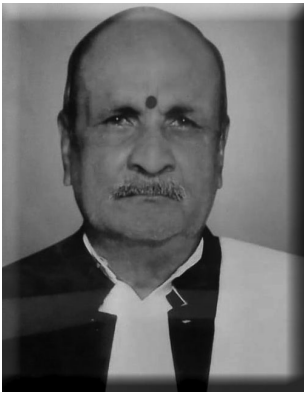

स्व. श्री रामकिशन भोलेनाथ पंचाल स्व. श्रीमती रामप्यारी रामकिशन पंचाल

माता-पिता को सादर समर्पित

यथार्थ दृश्यों के शब्द चित्र - उसके हिस्से की धूप

– विजय तिवारी 'विजय'

राष्ट्र के इस धुर पश्चिमांचल में, इस गुजरात प्रदेश में हिन्दी की अखण्ड ज्योति सदियों से प्रज्ज्वलित है। गुर्जर भूमि पर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित हुए हैं। गुजरात में हिन्दी साहित्य की गंगा अविरल - अनवरत रूप से प्रवहमान है। इसी श्रेष्ठ और स्तरीय गंगा की एक छोटी सी धारा का नाम है बंदना पंचाल।

जीवन की विषय परिस्थितियों से जूझते हुए भी बंदना ने हिन्दी की अत्यंत सराहनीय सेवा की है। उसके हिस्से की धूप बंदना का तीसरा काव्य संग्रह है। इससे पहले इनके दो काव्य संग्रह 'उम्मीद के सुमन खिलने दो' और 'करनी है तुमसे कुछ बात' (बाल गीत संग्रह) प्रकाशित हो चुके हैं। ये दोनों ही संग्रह हिन्दी साहित्य जगत में अपनी पहचान और स्थान बना चुके हैं।

'उसके हिस्से की धूप' में बंदना ने जीवन के अत्यंत नजदीक से भोगे हुए पहलुओं को अत्यंत मार्मिकता से उभारा है। मनुष्य की वेदना और उस वेदना को शब्दों में पिरोकर इस तरह से प्रस्तुत करना की पाठक और श्रोता के मन मस्तिष्क पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाए। इस कला में बंदना सिद्धहस्त मालूम होती हैं। आइए कुछ रचनाओं से परिचित होते चलें।

संग्रह के शीर्षक की रचना तो अत्यंत मार्मिक और हृदय को छू लेने वाली है। कितने सरल-सहज शब्दों में नौकरीपेशा स्त्री की पूरी आत्मकथा को बयान किया है। देखिए –

वह खड़ी हो जाती है
जब भी काम से
थोड़ा समय मिलता है
जब पड़ती कोमल किरणें उसकी थकी हुई देह पर
सच मानो
उसका निस्तेज चेहरा
मानो ख़ुशी से खिल उठता है

अधिकार और कर्तव्य के बीच झूलती कामकाजी महिला का इससे ज्यादा सुन्दर चित्रण और क्या हो सकता है।

वे लोग जो मेहनतकश हैं या जिन्हें अपने परिश्रम से ही सबकुछ पाना है। उन्हें सराहते हुए बंदना की यह रचना बहुत सुन्दर है –

जो अपने सपनों को उड़ान देते हैं
पंखों को विशाल आसमान देते हैं
आग में तपकर निखरते हैं जो
खुद को नयी पहचान देते हैं
मिलती है तालियों की गूँज उन्हें
ठहर जाती हैं हजारों आँखें उनपर
जो अपने आगाज़ को ख़ूबसूरत अंजाम देते हैं

जीवन में संघर्ष होना ही चाहिए तभी जीवन में चमक आती है। तभी जीवन के गूढ़ अर्थ समझ आते हैं और जीवन जीने का सलीका आता है। किन्तु कई दफा ऐसा भी होता है कि परिश्रम का पूरा फल प्राप्त नहीं हो पाता है –

कुछ इंद्रधनुष
रह जाते हैं अधूरे
कुछ रंग
पड़ जाते हैं कम
कुछ रंगों को
नहीं मिल पाती
अपनी सच्ची पहचान

मानवता का अर्थ क्या है और मानवता किसे कहते हैं इसे अत्यंत कम शब्दों में बंदना ने बहुत सुन्दरता से प्रस्तुत किया है –

तपती धूप में जो
घनी छाँव बन जाए
गर्दिश के दिनों में

अपनी बाँहें फैलाये
आशा हीन जीवन में
आस की किरण जगाये
निस्वार्थ भाव से
सेवा के दीप जलाये
वही सही अर्थ में सच्चा मानव कहलाये

ऐसे कई चित्र इस संग्रह में सजे हुए हैं। शहरीकरण में खोता मानव और मानवता को कितनी सहजता से प्रस्तुत किया है –

मानवता के इस जंगल में
रिश्तों के इस दंगल में
आदमी को अपने ही
घर में मैं ने खोते देखा है

मानव मन के मनोभावों, जीवन के संघर्ष और आपाधापी को शब्दों के माध्यम से उकेरने में बंदना सिद्धहस्त हैं यह कहना बिलकुल सही और सटीक है। पुस्तक प्रकाशन पर्व पर बंदना को बहुत-बहुत बधाई और हृदय से आशीर्वाद की वह साहित्य के क्षेत्र में और नयी ऊँचाईयों को छुये। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह संग्रह हिन्दी साहित्य में अपनी पहचान अवश्य बनाएगा।

अनन्त शुभकामनाएँ

–विजय तिवारी
अहमदाबाद
• अध्यक्ष एवं संस्थापक
• साहित्य सेतु परिषद (पंजीकृत)
• साहित्य सेतु अकादमी ट्रस्ट (पंजीकृत)
• vtlibrary.com विश्व का सर्वप्रथम वेब पुस्तकालय
• विश्व हिन्दी साहित्य संस्थान (यूट्यूब चैनल)
मोबाइल 9427622862

श्रेष्ठ काव्य-संग्रह

मैंने बंदना जी को विद्यार्थी जीवन से ही जाना है। हम दोनों राष्ट्रभारती हिंदी स्कूल, अहमदाबाद में सहपाठी रहे हैं। बचपन से ही वे एक तेज़, उत्साही और सृजनशील विद्यार्थिनी थीं। उन्हें कविता से विशेष लगाव था, और स्कूल के दिनों में जब वे अपनी कविता को स्वर देकर गाती थीं, तो पूरा माहौल मंत्रमुग्ध हो जाता था। यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता होती है कि आज भी बंदना जी उसी भाव और ऊर्जा के साथ मंचों पर अपनी कविताओं को गा-गाकर प्रस्तुत करती हैं। उनकी लेखनी में जहाँ एक ओर भावनाओं की गहराई है, वहीं दूसरी ओर एक विशिष्ट सुर और लय का सौंदर्य भी है। प्रस्तुत काव्य संग्रह में जीवन के विभिन्न रंग – प्रेम, पीड़ा, आत्मचिंतन, सामाजिक दृष्टिकोण – को बंदना जी ने अपनी मधुर लेखनी और गायन शैली के मेल से अद्‌भुत ढंग से प्रस्तुत किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह संग्रह पाठकों को न केवल पढ़ने का आनंद देगा, बल्कि उन्हें भावों की उस यात्रा पर ले जाएगा जहाँ हर कविता एक नया अनुभव होगी। बंदना पंचाल द्वारा रचित कविता "उसके हिस्से की धूप" उनके कविता संग्रह की शीर्षक रचना है, जो इस संकलन की संवेदनात्मक और वैचारिक धूरी बनती है। यह कविता न सिर्फ एक नौकरीपेशा स्त्री की दैनिक ज़िंदगी की झलक देती है, बल्कि उसके सपनों, संघर्षों और इच्छाओं को भी बेहद सहज पर गहरी संवेदना के साथ अभिव्यक्त करती है।

कविता में एक ऐसी स्त्री चित्रित है जो अपने व्यस्त जीवन से कुछ पल चुराकर धूप सेंकने खड़ी हो जाती है। यह "धूप" केवल धूप नहीं, बल्कि उसके हिस्से की ऊर्जा, आत्मीयता और सुकून की प्रतीक है। वह धूप जो उसे जीवन की कठिन तपिश में राहत देती है पर विडंबना यह है कि उसे यह धूप भी पूरी नहीं मिलती। वह स्त्री "जेठ की धूप में जलती है, पूस की ठंड में ठिठुरती है", यानी मौसम की हर कठिनाई को सहते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करती है। फिर भी उसका निस्तेज चेहरा जब कोमल धूप छूती है, तो वह क्षणिक आनंद से भर उठता है। यह दृश्य एक सामान्य लेकिन अनदेखी स्त्री की आंतरिक दुनिया को खोलता है — वह थकती है, सपने बुनती है, आशाओं की गाँठ खोलती है, और फिर उन्हें सीती है। बंदना पंचाल की भाषा अत्यंत सरल, प्रवाहपूर्ण और चित्रात्मक है। कविता में किसी आडंबर या बनावटीपन

का नामोनिशान नहीं है। उनके शब्द सीधे पाठक के हृदय में उतरते हैं। प्रतीकात्मकता ("धूप") और आत्मीय दृष्टिकोण से कविता में गहराई आ जाती है। नारी जीवन की सच्ची झलक: संग्रह की अन्य कविताएँ भी इस मूल स्वर को आगे बढ़ाती हैं — स्त्री की पहचान, उसकी चाह, उसका संघर्ष और उसकी मौन पुकार। ये कविताएं सामाजिक यथार्थ से जुडी हैं। केवल भावुकता नहीं रचतीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ को भी सामने लाती हैं। लेखिका का दृष्टिकोण सहानुभूतिपूर्ण ही नहीं, आत्मचिंतनशील भी है।

"उसके हिस्से की धूप" एक स्त्री की ज़िंदगी के उन अनकहे पलों की मार्मिक अभिव्यक्ति है जिन्हें अक्सर समाज अनदेखा कर देता है। यह संग्रह नारी चेतना की आवाज़ है — धीमी पर ठोस, कोमल पर तेजस्वी। बंदना पंचाल की यह कृति हिंदी कविता जगत में एक जरूरी हस्तक्षेप है, जो पाठकों को भीतर तक छूती है और सोचने पर विवश करती है कि क्या हम सबको सच में "अपने हिस्से की धूप" मिल रही है? यह संग्रह हर उस पाठक को पढ़ना चाहिए जो कविता में संवेदना, सरलता और सामाजिक गहराई की तलाश करता है।

– श्री संजय अहीर

प्रधानाध्यापक, उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा विभाग

प्रस्तावना

'उसके हिस्से की धूप' मेरा तीसरा काव्य संग्रह है। अपने पहले काव्य संग्रह 'उम्मीद के सुमन खिलने दो' और बालगीत संग्रह 'करनी है तुमसे कुछ बात' की तरह इस बार भी मैं अपने नए विचारों एवं नवीन काव्य प्रस्तुति के लिए उत्साहित हूँ। कहते हैं साहित्य समाज का दर्पण है। हम जो कुछ भी देखते हैं, सुनते हैं और महसूस करते हैं, उससे कभी सहमत होते हैं और कभी अपनी असहमति जताते हैं। ये सारी चीज़े मन के भाव बनकर शब्दों का रूप ले लेती हैं और साहित्य बन जाती हैं। साहित्य के क्षेत्र में अभी मुझे बहुत कुछ सीखना है, समझना है। जिसके लिए मैं आजीवन प्रयासरत रहूँगी। **'उसके हिस्से की धूप'** जीवन के कई बिखरे रंगों को उजागर करता काव्य संग्रह है। इसमें नौकरी पेशा स्त्रियों के अनकहे भाव, समाज के रुढियों के विरुद्ध आवाज़, पुरानी परंपराओं का विरोध आदि विभिन्न विषयों पर मैंने अपने विचारों को कविता का रूप दिया है। युद्ध की भयावहता, प्रकृति का विनाश, पशु –पंखी की वेदना इन विषयों पर भी मैंने अपने भाव व्यक्त किये हैं। साथ जीवन के कुछ कहे –कुछ अनकहे अनुभव, कई उतार -चढ़ाव, संघर्ष और उससे लड़ने के साहस को शब्दों में गूँथने का प्रयास है।

'उसके हिस्से की धूप' काव्य मुझ जैसी कई स्त्रियों के जीवन को समर्पित है जो सब कुछ करने बाद भी अपने हिस्से की धूप से वंचित है। ये धूप उनकी दबी इच्छाएँ और ज़िम्मेदारियों का प्रतीक है। कर्तव्य और उतरदायित्व से घिरी उन सभी महिलाओं को समर्पित है जो दोहरी ज़िम्मेदारी निभाती हैं। इसमें जीवन के कई रंग और अनुभव को संजोने की कोशिश की गई है। सुबह उठकर घर के दैनिक कार्य, अपने कार्यस्थल पर पहुँचने की जल्दी, वहाँ से लौटकर फिर गृहिणी की तरह अपने कार्यों में जुड़ना इन सब के बीच उसे शीत ऋतु में न तो वो कोमल धूप मिल पाती है और न ही ग्रीष्म की सुबह की शीतल हवा। उसके हिस्से की धूप ही उसके हिस्से में नहीं है। 'हमें माफ़ करना' 'लायका', 'परिवर्तन', 'बेबस बिल्लियाँ' और 'हिसाब' कविता पशु – पंखियों के प्रति दया और सहानुभूति के भाव को दर्शाती है। इस काव्य –संग्रह में युद्ध से होने वाले विनाश का भयावह मंजर है और युद्ध करना ज़रूरी है भी या नहीं इन दोनों विषयों पर मैंने अपनी कलम चलाई है। 'विद्यालय से मुलाकात'

कविता मेरे विद्यालय राष्ट्रभारती हिंदी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और वहाँ के गुरुजन को समर्पित है। बालमंदिर से लेकर कक्षा बारह तक मैंने यहीं शिक्षा प्राप्त की। जीवन संघर्ष का दूसरा नाम है। कभी सफलता भी मिलती है तो कभी असफलता, किंतु आगे बढ़ते रहना हमारा कर्तव्य है। 'सपनों की उडान', 'जीवन –एक संघर्ष', 'बंजर ज़मीं नहीं है' आदि कविता इसी भाव से प्रेरित है। 'पिता', 'अंतर्यामी', 'माँ', 'ख़ुशियों' का प्रतिबिंब जैसी रचना-रचनाएँ माता–पिता के असीम प्रेम और अपनत्व को दर्शाती हैं। 'ज्ञानदा' कविता में माँ सरस्वती की आराधना है। 'लाल रंग पर मेरा भी अधिकार है', 'मन के भीतर सहारा', 'नयी ज़िंदगी' जैसी कविताओं में अपने मैंने विचार और अनुभव इस संग्रह में कविता के रूप में स्थान दिया है। इस काव्य संग्रह में मैंने स्त्रियों के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। 'छतरीवाली स्त्रियाँ' और 'तू सर्वस्व है' और 'मन उदास हो गया' कविता में नारी का संघर्ष और उत्तरदायित्व झलकता है। वह प्रत्येक स्थिति में स्वयं को ढालकर अपने लक्ष्य तक पहुँचती है।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए मैं अपने जीवनसाथी, सहयोगी और मार्गदर्शक स्व. कमलेश पंचाल की आभारी हूँ। उनकी यादें और प्रेरणा मेरे लिए पाथेय है। मेरी पुस्तक प्रकाशित करने के लिए वे सदा प्रयासरत रहे। मैं अपने पिता जी श्री संतप्रसाद शर्मा और माता जी माधुरी शर्मा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ कि जीवन के कठिन दौर में भी उन्होंने हमारी शिक्षा को महत्त्व दिया और हर स्थिति में आगे बढ़ना सिखाया। मैं अपने गुरु डॉ. ओमप्रकाश गुप्त, डॉ. वीरेंद्रनारायण सिंह, डॉ गोवर्धन बंजारा और श्री राजेश क्षत्रिय की ऋणी हूँ जिन्होंने हिंदी के प्रति मेरी विशेष रुची जगाई। साथ ही मैं अपनी दोनों बड़ी बहन श्रीमती उर्मिला विश्वकर्मा और श्रीमती मिथिलेश शर्मा के मार्गदर्शन की आभारी हूँ। मैं अपने जेठ श्री अशोक लुहार की आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन में मेरी हमेशा सहायता की। मैं अपने पुत्र अभिनव कुमार के प्रति आभार और स्नेह व्यक्त करती हूँ। वे हमेशा तकनीकी कार्यों में मेरी सहायता करते हैं। मैं शर्मा परिवार और पंचाल परिवार के प्रत्येक सदस्य की आभारी हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस पुस्तक के प्रकाशन में मेरी मदद की। मैं साहित्यकार श्री विजय तिवारी जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। उन्होंने इस प्रकाशन में हर संभव मदद की और मार्गदर्शन किया। साथ ही मैं जहाँ शिक्षक के रूप कार्यरत हूँ वह संस्था शंकुल डिवाइन चाइल्ड इंटरनेशनल स्कूल की ट्रस्टी श्रीमती रुचि चौधरी, आचार्य श्री

साजी. वी.मैथ्यू का आभार व्यक्त करती हूँ। उन्होंने विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रम में मुझे नए अवसर प्रदान किये और मेरी लेखनी को सराहा। साथ ही मैं अपने विद्यालय के सभी संयोजक और सहकर्मियों की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और समय-समय पर मेरी हर संभव सहायता की। इस काव्य संग्रह के मुख पृष्ठ को तैयार करने के लिए मैं डिवाइन चाइल्ड इंटरनेशनल स्कूल के कला शिक्षक श्री भरत प्रजापति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। आप सभी का सहयोग और मार्गदर्शन सदा मुझे मिलता रहे इसी उम्मीद पर अपने शब्दों को विराम देती हूँ। आशा करती हूँ मेरा यह काव्य संग्रह पाठकों को पसंद आएगा और मेरे नए विचार उन तक पहुँच सकेंगे-

गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी ने इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए आर्थिक सहायता की है इसके लिए मैं अकादमी का हृदय से आभार ज्ञापित करती हूँ।

"वे अद्‌भुत हैं अनोखी हैं
हैं उनके कई रूप।
उनके साहस को समर्पित है
उसके हिस्से की धूप।"

– बंदना पंचाल

अनुक्रमणिका

1.	उसके हिस्से की धूप	1
2.	सपनों की उड़ान	2
3.	पहले शब्दों को चुनती हूँ	3
4.	पाथेय	4
5.	कलम हथियार बन जाती है	5
6.	हमें माफ़ करना	6
7.	मैं, तुम और गीत	8
8.	ज्ञानदा	9
9.	उसने कहा	11
10.	पिता	12
11.	परिवर्तन	13
12.	इंद्रधनुष के रंग	15
13.	प्यार की परिभाषा	16
14.	मानवता	17
15.	मैंने देखा	18
16.	एक चम्मच सुकून	19
17.	लाल रंग पर मेरा भी अधिकार है	20
18.	अंतर्यामी	21
19.	मन के भीतर सहरा	23
20.	जीवन – एक संघर्ष	24
21.	विद्यालय से मुलाकात	25
22.	घायल शहर	26
23.	शरद पूर्णिमा	27
24.	युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है	28
25.	सयाने बच्चे	29
26.	आधार हैं गुरु	30

27. विद्यालय माँ होती है 31
28. दीवारों के कान होते हैं 33
29. ज़रूरी है 34
30. एक सम्मान – उनके नाम 35
31. ख़ुशियों का प्रतिबिंब 37
32. छतरीवाली स्त्रियाँ 38
33. तू सर्वस्व है 39
34. शिव की प्राप्ति 40
35. बेबस बिल्लियाँ 41
36. नर बछड़े 42
37. प्यासी मछली 43
38. अटूट रिश्ता 44
39. आईना 45
40. हिसाब 46
41. पंद्रह अगस्त के लड्डू 47
42. ऐनक 49
43. आदमी 50
44. हाथ, दिल और दिमाग 51
45. बंजर ज़मीं नहीं है 52
46. मन उदास हो गया 53
47. नयी ज़िंदगी 54
48. कवि का प्रयास 55
49. बचपन की सैर 56
50. मेरी माँ 57
51. दशावतार 59
52. पाषाण 62
53. माँ 63
54. अगरबत्ती बनाती लडकियाँ 64

55. आभार 65
56. संघर्ष 66
57. बरखा बहार 67
58. मेरे साथ चल 68
59. लड़के 70
60. ये मेरे हिस्से का एकांत है 72
61. ढलान मिल जाती है 73
62. उफ़ ये गर्मी 74

1. उसके हिस्से की धूप

वह खड़ी हो जाती है,
जब भी काम से
थोड़ा समय मिलता है।
जब पड़ती है कोमल किरणें
उसकी थकी हुई देह पर
सच मानो,
उसका निस्तेज चेहरा
मानो ख़ुशी से खिल उठता है।
कभी - कभी काम करते - करते
अपनी अलसाई आँखों को
मलती है।
आशाओं को कभी उधेड़ती है,
कभी सपनों को बुनती है।
वह नौकरीपेशा स्त्री है,
जेठ की धूप में जलती है,
पूस की ठंड में ठिठुरती है
बस, उसे उसके हिस्से की
धूप नहीं मिलती है।

❋

2. सपनों की उड़ान

जो अपने सपनों को उड़ान देते हैं,
पंखों को विशाल आसमान देते हैं
आग में तपकर निखरते हैं जो,
खुद को नई पहचान देते हैं।
मिलती है तालियों की गूँज उन्हें,
ठहर जाती हैं हज़ारों आँखें उन पर
जो अपने आगाज़ को खूबसूरत अंजाम देते हैं।
वे सपनों को आँखों में नहीं
हथेलियों पर सजाते हैं,
अपने लक्ष्य को पाने के लिए
मेहनत को गले लगाते हैं।
समर्पित हो जाते हैं अपने कार्य के प्रति
कभी थकते नहीं और न खुद को विराम देते हैं।

❋

3. पहले शब्दों को चुनती हूँ

पहले शब्दों को चुनती हूँ
कविता उससे मैं बुनती हूँ।
जब हो जाती है छंदबद्ध
तब मन ही मन में गुनती हूँ।

हर शब्द में सार छिपा होगा
कहीं दर्द भी अनकहा होगा,
होगी आगे बढ़ने की सीख
कुछ प्रेमभाव भी रहा होगा।

गढ़ लेती हूँ कविता पूरी
गाकर खुद ही मैं सुनती हूँ,
जब हो जाती है छंदबद्ध
तब मन ही मन में गुनती हूँ।

4. पाथेय

जब लक्ष्य और सपने
बड़े हो जाते हैं
लोग आपके विरुद्ध
खड़े हो जाते हैं।
आपके दुख से, हार से,
असफलता की मार से,
उन्हें गहरा लगाव है।
वे प्रसन्नचित्त रहेंगे
जब तक दिल में घाव है।
उनके तानों से मजबूत
महत्त्वाकांक्षा की
नींव हो जाती है,
यही तो पाथेय बनकर
हमें लक्ष्य तक पहुँचाती है
और सपनों को
हक़ीक़त बनाती है।

❋

5. कलम हथियार बन जाती है

कलम जब
निखरती है, सँवरती है,
तब किसी से नहीं डरती है।
उगलती है कड़वा सत्य
हिचकिचाती नहीं,
घबराती नहीं,
हिम्मत जुटाती है।
पूरे सबूत के साथ
देती हैं जवाब।
कलम तब कलम
कहाँ रहती है
वह हथियार बन जाती है।

❋

6. हमें माफ़ करना

हमें माफ़ करना
तुम्हारे जाने के एक लंबे,
बहुत लंबे अंतराल के बाद लिख रही हूँ
पहली माफ़ी इसके लिए।
समझदार लाइका
हमने तुम्हें चुना
अपने सपनों को सजाने के लिए
विकास की नयी उडान पाने के लिए।
हम आश्वस्त थे,
तुम शायद जिंदा न भी लौट पाओ,
पर चिंता नहीं
तुम्हे गर्व होना चाहिए था
कि तुम चुनी गई
एक विशेष परीक्षण के तहत।
तुम श्वान थी
और अब एक अंतरिक्षयात्री,
किसी अनुसंधान की साक्षी।
तुम सकुशल लौट आओ
क्या ऐसी प्रार्थना भी की गई होगी ?
तुम्हारे न लौटने पर भी
कोई फ़र्क पड़ा होगा
नहीं पता।
प्यारी लाइका, तुम्हारे त्याग से
शायद बनी हो दूसरी दुनिया में

जाने की पहली सीढ़ी।
तुम्हारे ही बलिदान से
यह निष्कर्ष निकाला गया कि
अंतरिक्ष में मानव रह सकता है।
तुमने सिखाया हर मिशन के लिए
आगे बढ़ना,
प्यारी लाइका
हो सके तो हमें माफ़ करना।

❋

(परीक्षण हेतु सबसे पहले अंतरिक्ष में जाने वाली लाइका डॉगी को समर्पित)

7. मैं, तुम और गीत

तुम शब्द कहोगे, मैं गीत लिखूँगी,
विश्वास कहोगे, तो मैं मीत लिखूँगी।

तुम कहोगे मर्यादा, मैं राम लिखूँगी,
कर्तव्य कहोगे, तुंरत श्याम लिखूँगी।

श्रद्धा की बात होगी, ईश्वर मैं लिखूँगी,
तुम सुकून कहोगे, अपना घर मैं लिखूँगी।

नाम आयेगा ख़ुशी का, बचपन मैं लिखूँगी
माता- पिता कहोगे तो जीवन मैं लिखूँगी।

जीवन का सार कहोगे, गीता मैं लिखूँगी,
कहोगे अग्निपरीक्षा, तो सीता मैं लिखूँगी।

❋

8. ज्ञानदा

मैं ज्ञान हूँ, विज्ञान हूँ
विद्या का मैं वरदान हूँ।
मैं नृत्य में, संगीत में,
शिक्षा के हर एक गीत में।

मैं ज्ञान गंगा धार हूँ
बुद्धि का मैं विस्तार हूँ।
शहनाई की हर सुर में
वीणा की मैं झंकार हूँ।

मैं धैर्य हूँ, सदाचार हूँ,
मैं आपका सदविचार हूँ।
वेदों के हर एक श्लोक में
ज्ञान की हर ज्योत में।

ढूँढों मुझे मिल जाऊँगी
प्रज्ञा के हर आलोक में।
मैं भूत हूँ, भविष्य हूँ
मैं आपका वर्तमान हूँ।

मैं सत्य हूँ, निष्ठा भी हूँ
मैं ही प्रेम और सम्मान हूँ।
मैं आस हूँ, प्रयास हूँ
मैं ज्ञान का उजास हूँ

असफल को जो सफल करे
मैं वो कठिन अभ्यास हूँ।
विद्यालय ही मेरा वास है
जहाँ ज्ञान का प्रकाश है।

मैं साथ हूँ उसके सदा
जिसे मुझ पर पूर्ण विश्वास है।

❋

9. उसने कहा

उसने कहा
स्पर्श नहीं, अहसास है
मैंने कहा
मुझे पूरा विश्वास है।
उसने कहा
एक तस्वीर है, उस पर
फूलों का हार है
मैंने कहा
फिर भी स्वीकार है।
उसने कहा
प्रिये, क्या मेरी तलाश है?
मैंने कहा
जी नहीं, आप यहीं कहीं
मेरे आस-पास हैं।

❋

10. पिता

बूँदे बचाकर रखी थी
महादेव ने,
ताकि पुत्र के आगमन पर
उसे गर्मी न लगे,
ठंडक हो उसके
चारों ओर
सावन को रखकर सूखा
भादो को तरबतर किया
हर पिता करते हैं ऐसा
यही हमें संदेश दिया।

❋

11. परिवर्तन

हमने देखा था, पढ़ा था,
सुना था
चित्रों में, किताबों में,
गीतों में,
पंख फैलाकर नाचते हैं मोर
जब ख़ुश होते हैं।
उनकी सुरीली आवाज़ सुनी थी
बाग़ों में, वनों में।
हमने बचपन में जब भी
मोर का चित्र बनाया,
या कल्पना में सजाया
उन्हें नाचते हुए
ख़ुशहाल ही पाया।
लेकिन कल्पना से परे
हक़ीक़त में
वह नए रूप में
नज़र आया।
घबराहट में उड़ते हुए,
बसेरा छीनने पर
आक्रंद करते हुए,
और कुछ अजनबी लोगों से
डरते - सहमते हुए।
हमने जाना
मोर पंख फैलाकर

नाचता ही नहीं
अपने प्राण बचाने के लिए
भागता भी है।
इसी तरह चलता रहा
तो ऐसा भी वक्त आएगा,
आने वाली पीढ़ी के लिए
मोर का चित्र बनाना
कठिन हो जाएगा।

❋

12. इंद्रधनुष के रंग

कुछ इंद्रधनुष
रह जाते हैं अधूरे।
कुछ रंग
पड़ जाते हैं कम
कुछ रंगों को
नहीं मिल पाती
अपनी सच्ची पहचान
कुछ रंगों के पूरे
नहीं होते अरमान।
कुछ रंग असमय
फीके पड़ जाते हैं
धूप - बारिश से जैसे
डर जाते हैं।
कुछ रंग सपने होते हैं
छूना चाहते हैं आसमाँ।
कभी - कभी
इंद्रधनुष की तरह
अधूरे रह जाते हैं,
कुछ रंग
बहुत संघर्षों के बाद
लक्ष्य तक पहुँच पाते हैं।

❋

13. प्यार की परिभाषा

प्यार की परिभाषा को एक मज़दूर ने दिया बदल
उसके साहस के आगे तो फ़ीका पड़ गया ताजमहल।

पत्नी के विरह में जिसने चट्टानों को तोड़ा था,
छीनी-हथौड़ी के सहारे नया रास्ता जोड़ा था।

पूरा के पूरा पर्वत उसने अकेले काट दिया
आने वाली पीढ़ी का दुख खुद ही अकेले बाँट लिया।

प्रेम विरह के सागर का प्रेमी था वह मतवाला
देखा नहीं, कभी सुना नहीं, प्रेमी ऐसा दिलवाला।

कहते हैं अकेला चना, कभी भाड़ नहीं फोड़ सकता है,
दशरथ जैसा साहस हो तो सब कुछ संभव हो सकता है।

❋

14. मानवता

तपती धूप में जो
घनी छाँव बन जाए
गर्दिश के दिनों में
अपनी बाहें फैलाये,
आशाहीन जीवन में
आस की किरण जगाये,
निस्वार्थ भाव से
सेवा का दीप जलाये,
वही सही अर्थ में
सच्चा मानव कहलाये।

❋

15. मैंने देखा

मकानों के इस जंगल में
रिश्तों के इस दंगल में
आदमी को अपने ही
घर में मैंने खोते देखा।

बिखरे हुए शामियाने में
बुझे हुए आशियाने में
सिर्फ दहेज की ख़ातिर
एक पिता को मैंने रोते देखा।

बुझी हुई अलाव में
दर्द भरे उस घाव में
सपनों के नन्हें बीज को
पसीने से मैंने बोते देखा।

❋

16. एक चम्मच सुकून

ख़ुशी के पल में भी ये मन उदास है
जो छूट गया है उसे पाने की आस है।
टोकरी भर इस जीवन में बस
एक चम्मच सुकून की तलाश है।
दौड़ रही है ज़िंदगी न थमने का नाम है
दो पल चैन से बिताना अब कहाँ आसान है।
उम्मीद के दामन में छिपा चेहरा
जाने क्यों निराश है
टोकरी भर इस जीवन में बस
एक चम्मच सुकून की तलाश है।
अथाह सागर में जब
नाव भटक जाती है
साहस के बल पर मंज़िल वह पाती है
आने वाला कल बेहतर होगा
मन में यही विश्वास है
टोकरी भर इस जीवन बस
एक चम्मच सुकून की तलाश है।

❋

17. लाल रंग पर मेरा भी अधिकार है

तन नश्वर और आत्मा अमर है
किसी की अनुपस्थिति
मुझे आजीवन स्वीकार है,
इसलिए लाल रंग पर
मेरा भी अधिकार है।

कुछ मीठी यादें साथ हैं
गिले - शिकवे भी याद हैं,
एक मुसकुराता चेहरा है
जीवन जिससे आबाद है।

तुम हो मेरे आस पास
बस यही मेरा आधार है,
इसलिए लाल रंग पर
मेरा भी अधिकार है।

अनुभूति के तार को
मोतियों में पिरोया है,
हृदय के संदूक में
हर लम्हा संजोया है।

यादों का उपहार ही
मेरा साज-श्रृंगार है
इसलिए लाल रंग पर
मेरा भी अधिकार है।

❋

18. अंतर्यामी

ठेलेवाले सामान बेचकर
खरीदते हैं
बच्चों के सपने,
एक छोटी सी गुड़िया
बिटिया की फरमाइश पर।
चाबीवाली मोटर कार
बेटे के लिए,
खरीद लेते हैं
गुलाबी रंग की एक
सस्ती साड़ी।
साथ ही खरीद लेते हैं
पाँच सौ ग्राम केक
जो बिटिया के जन्मदिन पर
नहीं ला पाए थे।
अरे, हवाई चप्पल तो भूल ही गए
वो तो लेना ही था।
बेटा दो दिन से
नंगे पैर स्कूल जाता है,
हमेशा मुस्कुराता है
लेकिन पापा से नहीं
बताता है।
पापा होते हैं अंतर्यामी।
यूँ ही नहीं कहलाते
घर के स्वामी

खुद को भूलकर
सब खरीद लेते हैं
सारी ख़ुशियाँ झोली में भरकर
घर की ओर चल देते हैं।

❋

19. मन के भीतर सहरा

वह जो बाहर से
बहुत हरा-हरा है न
दरअसल अंदर से
बहुत गहरा है।

वो जो अक्सर खिलखिलाती है,
सभी पर अपना प्यार लुटाती है,
कभी गौर करना
उसकी यादों में सुबह-शाम
किसी अपने का पहरा है।

वो सजती है सँवरती है,
उन्मुक्त पंछी की तरह उड़ती है,
कभी ध्यान से देखना
एक बीते हुए पल में
उसका सारा जीवन ठहरा है।

वो जो हिसाब-किताब में खोई है
कभी जागती, कभी सोई है,
उपवन है उसके चारों ओर
लेकिन भीतर विशाल सहरा है।

❋

20. जीवन – एक संघर्ष

जीवन के संघर्ष की बस यही पहचान है,
घायल परिंदे को भरनी ऊँची उड़ान है।

और कुछ मिले या न मिले गम नहीं कोई,
बंद मुट्ठी खुल जाए बस यही अरमान है।

मेहनत के पंख लगाकर देख लेना कभी,
हर मुसीबत लगेगी आपको आसान है।

जीत ली है जिसने जंग ज़िंदगी की,
उस शख़्स पर तो ख़ुदा भी मेहरबान है।

कोशिश करते रहना ही सबक है जीवन का,
परिंदों से मैंने पाया प्यारा यह पैग़ाम है।

❋

21. विद्यालय से मुलाकात

ये वही विद्यालय है जहाँ
खुली आँखों से देखे थे सपने
हाँ, ये मेरी स्कूल है, जहाँ मिलते थे
रोज मेरे अपने।
आज जिस भी मुकाम पर है
उसमे इस बेजुबान इमारत का
बहुत बड़ा योगदान है।
योगदान है मेरे गुरुजन का।
बचपन के जाने कितने किस्से
आज फिर यादों के पिटारे से
उभर आए।
आभार व्यक्त करती हूँ
उन सभी का
जिन्होंने मेरे सपने सजाए।

❋

22. घायल शहर

घायल हुए शहर की वीरानियाँ देखी,
तबाही के मंजर की कहानियाँ देखी,
सरहद के दोनों और बैठे आकाओं की
बेवजह की हमने मनमानियाँ देखी।
देखा हमने मौत बरसती है गगन से
बहती है रक्त धारा, फूलों के चमन से
गोली और बारूद की आवाज़ गूँजती,
जाएँ तो कहाँ जाएँ हम अपने वतन से।
गली-गली, शहर-शहर बर्बाद हो गए
बर्बादियों की हमने निशानियाँ देखी।
खंडहर हुए नगर हैं और कब्र हुए घर
बेबस हुए हैं लोग कहो जायेंगे किधर
अनाथ हुए बच्चे, बिलखती हुई माँ
लाशों से ढक गयी है शहर का हर डगर
मंज़र है ये कैसा, सब कुछ ही जल गया
जलती हुई फसल में बस बालियाँ देखी।
वसुधा दी हमें सुंदर और विशाल आसमाँ
कुदरत ने सजाया है प्यारा-सा ये जहाँ।
निर्दोष मर रहे हैं, दिन रात डर रहे हैं,
आखिर बताओ बचकर ये जायेंगे कहाँ
खामोशियाँ देखी बहुत उदासियाँ देखी
चेहरे पर उम्र भर की परेशानियाँ देखी।

❋

23. शरद पूर्णिमा

रंग में उमंग भरे, चंदा के संग चले,
शरद पूर्णिमा की रात आई।

पायल की रुनझुन, नाचे सब घूम - घूम,
सतरंगी चूनर लहराई।

प्यारा ये पर्व आया, ख़ुशियाँ है संग लाया,
प्रकृति ने ली है अंगड़ाई।

उत्सव है चारों ओर, नर - नारी हैं विभोर,
संग राधा के झूमे कन्हाई।

छिटकी है चाँदनी, गूँजे है रागिनी,
वर्षा ने ली है विदाई।

उजला है व्योम और, पुलकित है रोम - रोम,
सुषमा प्रकृति की ऐसी छाई।

❋

24. युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है

आह, वेदना, दर्द और विनाश का पर्याय है
किसी भी प्रश्न का नहीं ये उपाय है।
इसके अंजाम से कोई अंजान नहीं है
युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है।

काले –डरावने अंबर से मौत बरसती है
मानव जाति का ये सर्वनाश ही करती है।
क्षत –विक्षत शव का लगा हुआ अंबार है
हर तरफ बस लहू की नदियाँ बहती है।

क्यों देखकर यह सब कुछ कोई हैरान नहीं है
युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है।

❋

25. सयाने बच्चे

बड़े मासूम बड़े प्यारे से लगते हैं,
ये वो बच्चे हैं जो गुब्बारे बेचा करते हैं।

फटे हैं कपड़े और नंगे पाँव घूमते हैं,
हैं भूखे पेट फिर भी मुस्कुराकर झूमते हैं,
हवा नहीं ये गुब्बारों में सपने भरते हैं,
ये वो बच्चे हैं जो गुब्बारे बेचा करते हैं।

ये उम्र होती है रूठने मानने की,
नन्हीं सी आँखों में ख्वाब को सजाने की,
ख़ुश होकर सारे दर्द सहा करते हैं,
ये वो बच्चे हैं जो गुब्बारे बेचा करते हैं।

अपने टूटे हुए परिवार का सहारा हैं,
कोई मजबूर तो कोई किस्मत का मारा है,
हैं छोटे मगर हालात को समझते हैं,
ये वो बच्चे हैं जो गुब्बारे बेचा करते हैं

❋

26. आधार हैं गुरु

बच्चों की सफलता का आधार हैं गुरु
विद्यालय में माता-पिता का प्यार हैं गुरु।

कभी डाँटकर सिखाते, कभी प्यार हैं जताते
हो जाए हमसे गलती तो राह भी दिखाते।

ईश्वर का दिया प्यारा -सा उपहार हैं गुरु
विद्यालय में माता-पिता का प्यार हैं गुरु।

गुरु जो भी सिखलाएँ, उसे हर्ष से अपनाए,
हम सब की ख़ातिर ज्ञान गंगा जो बहाए,

जीवन है एक पाठ तो उसका सार हैं गुरु
विद्यालय में माता-पिता का प्यार हैं गुरु।

❋

27. विद्यालय माँ होती है

विद्यालय माँ होती है,
ईंट और गारे की बनी।
जब आप रखते हैं पहला कदम
अपनी दीवारों से ताकती है
और वर्षों तक आपका
बचपन और किशोरावस्था
निहारती है,
क्योंकि विद्यालय माँ होती है।

आपकी सारी करतूते
जो करते हैं आप छिपकर
हमसे,
ये फर्श, ये खिड़कियाँ, ये दरवाज़े
उन सभी शरारतों की
गवाह हैं।
जब बनते हो आप विजेता
तो आपके सम्मान पर
ये तालियाँ भी बजाती हैं
क्योंकि विद्यालय माँ होती है।

ये जानती हैं कि हमें छोड़कर
आप किसी नई संस्था से जुड़ेंगे,
कुछ और निखरेंगे,
कुछ और सँवरेंगे।

जगमगाएंगे वैश्विक फलक पर
चमकेंगे किसी समाचार पत्र के
पहले पन्ने पर,
ऐसी ख्वाहिशें ये रखती हैं,
क्योंकि विद्यालय माँ होती है।

भर आती हैं इनकी आँखें
जब कोई विदा होता है,
कि जैसे माँ रोती है ख़ुश होकर,
जब उसके कलेजे का टुकड़ा
कुछ बनने के लिए जुदा होता है

❋

28. दीवारों के कान होते हैं

किसी ने कही और किसी ने सुनी
ये बातें राज की जाने कहाँ पहुँची,
क्यों अपनी हरकतों से हम अंजान होते हैं
और कहते हैं दीवारों के कान होते हैं।

जो नहीं हैं मौजूद, करें उनका सम्मान
उनकी अच्छाइयों का, करें पीठ पीछे गुणगान।
क्यों बने हम ऐसी चर्चा का हिस्सा
छोटी-सी बात का बनाते हैं किस्सा।

फिर सुनके वही किस्सा हम हैरान होते हैं,
और कहते हैं दीवारों के कान होते हैं।

ऐसे ही तो बनता है राई का पहाड़
या यूँ कहे कि बनता है तिल का बड़ा ताड़।
बेवजह जब किसी के कोई कान भरता है
जाने अनजाने वो भी गुनाह करता है।

क्यों हम किसी की राह में काँटे बोते हैं
और कहते हैं दीवारों के कान होते हैं।

ये आदत बुरी है इसे छोड़ना होगा
अच्छे विचारों से मन को जोड़ना होगा।
गलती है अपनी तो स्वीकार हम करें
और सच हो यदि तो ना किसी से डरे।
जो दिल के साफ़ होते हैं, वे महान होते हैं
वे कहते नहीं दीवारों के कान होते हैं।

❋

29. ज़रूरी है

जब अधर्म और अन्याय सिर उठाए
तब युद्ध जरूरी है,
जब बात आत्मसम्मान की आए,
तब युद्ध जरूरी है।
जब नारी के सम्मान पर कोई दाग लगाए
तब युद्ध जरूरी है,
जब अपने अधिकार को कोई छीन ले जाए
तब युद्ध जरूरी है।

❋

30. एक सम्मान – उनके नाम

आओ उनके सम्मान में
एक बार ताली बजाएँ
जो लक्ष्य तक पहुँचने के लिए
दौड़े थे जी –जान लगाकर
किंतु पहुँच नहीं पाए
सूने रह गये उनके कंठ पदक बिना
फिर भी वे विजेता के पीछे
खड़े-खड़े मुस्कुराये
आओ उनके सम्मान में
एक बार ताली बजाएँ।

आओ उनके सम्मान में
एक बार ताली बजाएँ
जिन्होंने वक्त –बेवक्त
किसी विभूति के आने से पहले
चमकाया शहर को,
हर गली, हर डगर को।
दीवारें रंगीन की,
फूलों की माला से चौराहे सजाये
उनकी मेहनत से
बेजान रास्ते भी जगमगाये
आओ उनके सम्मान में
एक बार ताली बजाएँ।

आओ उनके सम्मान में
एक बार ताली बजाएँ
जो असफल हुए परीक्षा में,
घंटों रोये बंद कमरे के भीतर
जो कुछ अंकों से चूक गये
अपने सपनों को फिर से
संजोकर, मेहनत का बीज बोकर
उभरे और अधूरे सपनों को
पूरा कर दिखाए
आओ उनके सम्मान में
एक बार ताली बजाएँ।

❋

31. ख़ुशियों का प्रतिबिंब

जब भी पहनती हूँ नए कपड़े
ख़ुश हो जाती है माँ।
मेरे कपड़ों की चमक
फ़ीकी पड़ जाती है
उनकी आँखों की चमक के आगे।
फ़ीके पड़ जाते हैं अक्सर
रंगीन चमकदार धागे।
मैंने देखा है
बच्चों को नए कपड़े,
जूते, मोजे, हेयरबैंड
जब भी माँ पहनाती है
उनके चेहरे की लाली
माँ के चेहरे पर अपनेआप
आ जाती है।

❋

32. छतरीवाली स्त्रियाँ

सिर पर रंग-बिरंगी
छतरियाँ लिए धीरे –धीरे,
नज़रे झुकाए चल रही महिलाएँ
अपने परिवार का आधार हैं।
आर्थिक विपन्नता से
जूझ रही ये स्त्रियाँ
किसी बारात की नुमाईस का हिस्सा
बनने के लिए लाचार हैं।
दूसरों के विवाह में रंग और
रोशनी बिखेरती
ये मेहनतकश महिलाएँ
पूरी ईमानदारी से अपना
कर्तव्य निभाती हैं लेकिन
अपनी ही ज़िन्दगी से बेरंग और अँधेरा
नहीं मिटा पाती हैं।

❋

33. तू सर्वस्व है

तू प्रीत है, तू गीत है जीने की नित नई रीत है,
श्रद्धा है तू, विश्वास है तू हौसला है जीत है।

तू दुर्गा है, तू काली है, तेजस्वी है तू निराली है,
ज़िम्मेदारियों को निभाती है, तू सृष्टि की रखवाली है।

ईश्वर का तू उपहार है, जीवन का तू ही सार है,
करूणा है तू ममता है तू, तू ही प्रेम रस की धार है।

पर्वत -सी तुझमें ऊँचाई है, सागर सी गहराई है
नदियों -सा तुझमें प्रवाह है, ईश्वर की तू परछाई है।

अंधकार में तू प्रकाश है, निराशा में भी एक आस है,
बगिया का महकता गुलाब है, वन में खिला पलाश है।

काली घटा -सी बरसती है, पंखी –सा तू चहकती है,
कलियों –सी जो मुस्काती है, वही ज्वाला- सी दहकती है।

परिवार का तू आधार है, ऊर्जा का तू भंडार है,
तुझ बिन तो सूना है जहाँ, तू है तो ये संसार है।

❋

34. शिव की प्राप्ति

शिव जैसा बनना
यदि अत्यंत कठिन है,
तो कहीं ज़्यादा कठिन है
शिव को पाना।
क्या आसान है
आत्मसम्मान की ख़ातिर
अग्निकुंड में समा जाना?
मात्र भक्ति से नहीं मिलते शिव,
शिव मिलते हैं अटूट विश्वास से,
ईश्वर को पाने के लिए
किए गए अथक प्रयास से।
प्राप्त करना हो शिव को
तो शिव जैसा बनना पड़ेगा,
लोगों के व्यंग्य बाण को
मुस्कुराकर सहना पड़ेगा।
शिव से मेल के लिए
प्रासादों को छोड़ना होगा,
शिवमय होकर आजीवन
शिव से नाता जोड़ना होगा।

❋

35. बेबस बिल्लियाँ

सारा जग थककर जब
चैन की नींद सो जाता होगा,
तब डरी हुईं भूखी बिल्ली को
खाना कौन खिलाता होगा?

श्वान की तरह निडर होकर
न गलियों में घूम पाती हैं,
न पक्षी की तरह दाना चुगकर
नभ में झट से उड़ जाती हैं।

ज़रा बताओ, उन बेबस को
पास कौन बुलाता होगा,
तब उन प्यासी बिल्ली को
पानी कौन पिलाता होगा?

चोरों -सा है उनका जीवन
दबे पैर आना-जाना,
जितना तो नहीं मिलता है
उससे ज़्यादा डंडे खाना।

उनका भी कोई रखे ख्याल
कौन उन्हें सहलाता होगा,
तब डरी हुईं प्यारी बिल्ली को
अपना कौन बनाता होगा?

❋

36. नर बछड़े

नर बछड़े,
बोझ हैं धरती पर।
राष्ट्र के विकास में
अब उनका कोई योगदान नहीं।
नर बछड़े,
अलग कर दिए जाते है
अपनी माँ से,
जन्म के कुछ दिन बाद ही
क्योंकि हमें पीना है दूध
तभी तो बनेंगे सेहतमंद।
कहाँ मिलेगा दूध से
बनने वाला उत्पाद,
यदि नर बछड़े पी जाएँगे
माँ का दूध।
ईश्वर उन अबोध, प्यारे
और बेबस बच्चों को
साहस दें,
माँ से जुदा होने की
दुख सहने की
और काल के गर्त में
समा जाने की।

❋

37. प्यासी मछली

सब को मिल जाता है सब कुछ
फिर कैसी छायी उदासी है,
सागर की गहराई में भी
जल की मछली प्यासी है।

जिसका जो भी हिस्सा था
मिलकर सबने बाँट लिया,
जिसे ज़रूरत ज़्यादा थी,
नाम उसी का काट दिया।

किसके आगे वह जोड़े हाथ
सब एक ही घाट के वासी हैं,
सागर की गहराई में भी
जल की मछली प्यासी है।

कितने ही भवन बनाता है
पर झोंपड़ी में सो जाता है,
खेत जोतता है दिनभर
ख़ून - पसीना बहाता है।

ऋण में डूबा सारा जीवन
जिसकी की ये धनराशि है,
सागर की गहराई में भी
जल की मछली प्यासी है।

❋

38. अटूट रिश्ता

जुड़ा है नैनों से शायद
हृदय का कोई नाजुक तार,
मन जब भावुक होता है
तो बहती है अश्रु की धार।

नहीं किसी को दिखता है
ऐसा अदृश्य ये बंधन है,
एक के पास लड़ी आँसू की
दूजे के पास धड़कन है।

इन्हीं दोनों ने समेट रखा
पीड़ा का सारा संसार,
मन जब भावुक होता है
तो बहती है अश्रु की धार।

अँखियों ने देखा दुख को
हृदय को सब बता दिया,
आहत उर ने अश्रुजल
झट से नैनों में पहुँचा दिया।

एक दूजे के साथ हैं दोनों
पतझड़ हो या बहार,
मन जब भावुक होता है तो
बहती है अश्रु की धार।

❋

39. आईना

अपने दायरे से बाहर भी दुनिया है बेहतर,
खुद के आइने में तो सब दिखते हैं सुंदर।

डगर हो पहचानी तो भाती है सबको,
मंज़िल भी आसाँ नज़र आती है सबको।

संसार देखो अहम का ऐनक हटाकर,
खुद के आइने में तो सब दिखते हैं सुंदर।

नए रास्ते पर बढ़ो तब न जाने,
चलो साथ लेकर सभी को तो जाने।

सीमित करो न जिंदगी का सफ़र,
खुद के आइने में तो सब दिखते हैं सुंदर।

❋

40. हिसाब

मात्र पूजा, रोजा, प्रेयर
नामजप, तीर्थयात्रा
या हज का ही
देना होगा हिसाब,
इस भ्रम मे दुनिया
न रहे तो बेहतर है।
उसे देना होगा जवाब
अबोल पशु-पक्षी पर
किए गए अत्याचार का
जब भी खुलेगी
हमारे कर्मों की किताब
हमें देना ही होगा
सबका हिसाब।

❋

41. पंद्रह अगस्त के लड्डू

बहुत याद आते हैं
पंद्रह अगस्त के दो लड्डू
जो मिलते थे,
पूरे कार्यक्रम समाप्त होने के बाद ।
नहीं होती थी तब कोई प्रस्तुति
जिसमें तिरंगे जैसा
वस्त्र पहने छात्राएँ
करती थी देशभक्ति गाने पर नृत्य।
होता था ध्वजारोहण
जय हिंद और भारत माता की जय की
ध्वनि से गूँज उठता था आसमाँ।
सुरीले कंठ वाले बच्चे
ए मेरे वतन के लोगों
और
इंसाफ़ की डगर पर
गीत गाते थे।
प्रधानाचार्य जी के भाषण के बाद
सभी शिक्षक
लड्डुओं से भरी टोकरी
लेकर आते थे।
हमारा चेहरा खिल उठता था
जब सभी बच्चों में
लड्डू बँटता था।
अब हर उत्सव में ताम-झाम है

भावना है कम बस
वीडियो और फोटो का
सुंदर इंतजाम है।
इन सभी के बीच
मन करता है
पुराने लम्हों की फिर तलाश
कभी न भूलेंगे हम
उन दो लड्डुओं की मिठास ।

❋

42. ऐनक

देखो दुनिया को
एक नए नज़रिये से
इतने भी बुरे नहीं लोग
जितना आपने सोचा है।
हो सकता है
आपके मन का यह धोखा है।
उतारिये अपनी आँखों पर
चढ़ाया ऐनक
झाड़ दीजिये, गलतफ़हमी
और वहम की धूल।
सुंदर है संसार
इसे अपने तराजू में तौलने की
कभी न करें भूल।

❋

43. आदमी

धरती है सबकी बात ये करता है आदमी
हक छीनकर दूजे का कब डरता है आदमी।

ये सागर, ये नदियाँ, ये पहाड़ और जंगल
सभी का हक़ है इन पर आज हो या कल।

कितने जतन से पेड़ लगाता है आदमी
वन काटकर इमारतें बनाता है आदमी।

बेजुबानों का वह बन जाता है सहारा
करता है देखभाल जो हैं बेसहारा।

जीवन के सारे कर्तव्य निभाता है आदमी
स्वार्थ में आकर सब भूल जाता है आदमी।

देख लो, आदमी के यहाँ कितने रंग हैं
कोई सच के साथ, कोई झूठ के संग है।

आखिर क्यों दानव बन जाता है आदमी
जैसा भी हो मानव ही कहलाता है आदमी।

❋

(नज़ीर अकबराबादी के 'आदमीनामा' काव्य से प्रेरित)

44. हाथ, दिल और दिमाग

हाथों से काम करते थे
तब तक अच्छे थे
ईमानदार थे,
शरीफ थे, वफ़ादार थे।
दिमाग से काम करने लगे
तो खराब हो गए।
किसी धार्मिक ग्रंथ से
किताब हो गए।
जब से
हाथ और दिमाग के
साथ- साथ
दिल को जोड़ दिया है
तब से लोगों ने
बेवजह
मुँह मोड लिया है।

❋

45. बंजर ज़मीं नहीं है

ये विश्वास है अटूट
हौसलों की कमी नहीं है,
खिलेंगी आशा की कलियाँ
ये बंजर जमीं नहीं है।

चादर बिछा दो प्रेम की
बटोर लो सारी ख़ुशियाँ,
निर्मल बना लो मन को
शबरी की जैसे कुटिया।

वे नैन ही क्या जिनमें
स्नेह की नमी नहीं है,
खिलेंगी आशा की कलियाँ
ये बंजर जमीं नहीं है।

बदलते हैं मौसम सदा
ऋतुएँ भी बदलती हैं,
होता है वहीं सवेरा
जहाँ साँझ ढलती है।

गतिशील धरा को देखो
वह कभी थमी नहीं है,
खिलेंगी आशा की कलियाँ
ये बंजर जमीं नहीं है।

❋

46. मन उदास हो गया

ये तो कोई बात नहीं हुई
वह पुल्लिंग बन गया
जिसका बड़ा है आकार,
जो छोटा रह गया
उसे स्त्रीलिंग के रूप में
किया गया स्वीकार।
व्याकरण तक तो ठीक है सब
पर जाने क्यों कुछ सवाल
उठ रहे हैं मन में अब।
छोटा स्त्रीलिंग है
क्योंकि वह नाजुक है
दायरे में सीमित है।
महानता से दूर है,
मर्यादा में रहने के लिए
मजबूर है।
स्त्रियों की वीरता, महानता
साहस, दृढ़ता, त्याग या बलिदान।
कुछ भी छोटा नहीं
न आकार में, न संसार में।
जाने क्यों आज यह
अनायास हो गया,
जो कुछ छोटा है, वह स्त्रीलिंग है
यह सोचकर मन उदास हो गया।

❋

47. नयी ज़िंदगी

वेदना का सागर
कितना गहरा होता है,
यादों का हर वक़्त
कितना पहरा होता है,
यह तो उसमें डूबने वाला ही
जान पाता है।
कुछ खोने का गम
कुछ पाने की चाह
इसी सागर में डूबने पर मिलती है।
गुलाब की सुंदरता
महसूस करनी हो तो
काँटे चुभने पर
रोया नहीं जाता।
जब कोई व्यक्ति
संघर्ष करते हुए
आशाओं के बीज बोता है,
तभी एक नयी ज़िंदगी का,
एक नए लक्ष्य का निर्माण होता है।

❋

48. कवि का प्रयास

कवि ने प्रयास किया
खुद पर विश्वास किया।
सोचा,
चलो, आज कविता को
जीवित किया जाए।
अपने विचारों से
किया देह का निर्माण
मन के भाव और रस से
उसमें डाले प्राण।
अलंकार, प्रतीक, बिंब
और उपमान से उसे सजाया।
तब जाकर कविता को
एक मानव के रूप में पाया।
अपनी इस जीवित कविता को
खड़ा कर दिया
लोगों के सामने।
पर, ये क्या हुआ?
कविता सहम गई,
साँसें मानो थम गई।
आदिकाल से आधुनिक काल तक के
सारे वाद भूल वह घबरा गई,
निजवाद और विवाद देख
पुनः पुस्तक में समा गई।

❋

49. बचपन की सैर

हो गयी आज मुलाकात मेरी फूलों से,
सौंधी मिट्टी से औऱ सावन के झूलों से।

लो याद आ गई मुझे मेरे बचपन की
आओ बतिया लें फिर पनघट से, चूल्हों से।

वो भी क्या दिन थे औऱ कितनी हसीं रातें थी,
दिन मे तितली रात जुगनुओं की बातें थीं।

वो अठखेलियाँ, नादानियाँ फिर मिल जाए,
चलो कहीं दूर चलें झूठे इन उसूलों से।

मिट्टी के तन को आज मिट्टी मे सनने दो,
वो बीते हुए ख्वाब़ों को फिर. से बुनने दो।

जो आज हमने सीखा, खैर कोई बात नहीं,
बहुत कुछ सीखा है बचपन की भूलों से।

हो गई आज मुलाकात मेरी फूलों से
सौंधी मिट्टी से और सावन के झूलों से।

❋

50. मेरी माँ

मैं देखूँ जहाँ, नज़र आए तू वहाँ
आँचल में तेरे समाया जहाँ,
बिन बोले समझती है हर दर्द मेरा
मेरी माँ, मेरी माँ, मेरी माँ।

जीवन की तपती धूप को
बदल देती है वो छाँव में।
चुभने नहीं देती कभी
दुख का काँटा पाँव में।

उसके बिना अधूरा है जीवन
वो ममता फिर पायेंगे कहाँ,
बिन बोले समझती है हर दर्द मेरा
मेरी माँ, मेरी माँ, मेरी माँ।
उँगली पकड़कर चलना सिखाया
हर फ़र्ज़ उसने दिल से निभाया।
बच्चों की ख़ातिर सदा ही उसने
सारी ख़ुशियों को हँसकर भुलाया।

कितना बरसाया है प्यार उसने
नहीं कर पायेंगे कभी हम बयां।
बिन बोले हर दर्द समझती है
मेरी माँ, मेरी माँ, मेरी माँ।

जेठ-बैसाख की हो दोपहरी
या बरसे रिमझिम सावन।

कोई भी ऋतु न बनती है बाधा
थकता नहीं है कभी उसका तन।

जीवन का सबसे प्यारा तोहफा
धरती पर है ईश्वर का निशाँ।
बिन बोले हर दर्द समझती है
मेरी माँ, मेरी माँ, मेरी माँ।

❋

51. दशावतार

रूप का विस्तार किया, पाप का संहार किया
धर्म और सत्य की, स्थापना की प्रभु ने
जब जब हरि ने धरा पर अवतार लिया।

प्रचंड था जल की धारा का बहाव,
मत्स्य बन प्रभु ने खींची थी तब नाव।
प्रलय के प्रकोप में डूबा था संसार
हरि ने धारण किया मत्स्य अवतार।

भगवान विष्णु ने लिया मोहिनी का रूप
प्राप्त किए चौदह रत्न,दृश्य था अनूप,
बने मंदार पर्वत का आधार
हरि ने लिया तब कूर्म अवतार।

हिरण्याक्ष ने जब दुस्साहस किया
धरती को अथाह सागर में छिपा दिया,
प्रकट हुए विष्णु, ब्रह्माजी की जी नाक से
पृथ्वी को उठा लाये, अपने विशाल दांत से,
देवों की विनती को हरि ने किया स्वीकार
धरा को बचाने लिया वराह अवतार।

बढ़ रहा था त्रिलोक में हिरण्यकश्यप का अत्याचार
त्राहिमाम हो उठे सभी, गए हरि के द्वार
पाषाण हृदय पिता का पुत्र, प्रह्लाद था जिसका नाम
नारायण की भक्ति करना था उसका बस काम ।

भक्त की रक्षा के लिए हरि थे तैयार
प्रकट हुए खंभे से, लिया नरसिंह अवतार।

राजा बलि का घमंड दूर करने
तीन पग भूमि माँगा विप्र वर ने,
पृथ्वी और स्वर्ग दो पग में समा गए
तीसरे पग में राजा पाताललोक आ गए,
दूर किया राजा का अहंकार
हरि लिया वामन अवतार।

शिव ने प्रसन्न होकर, दिया था जिसको फरसा
क्षत्रियविहीन कर धरा को,दिया तेज़ का परचा,
भीष्म और द्रोण को, गुरु बन दिया ज्ञान
उनकी वीरता का, हम क्या देंगे प्रमाण,
केशव को दिया सुदर्शन का उपहार
सहस्त्रार्जुन का वध किया
जब लिया परशुराम अवतार।

मनुज के रूप में कहलाए श्री राम
ताड़का मारी,अहिल्या तारी
रावण संग किया संग्राम,
दशानन का वध किया
अधर्म का किया विनाश,
रामराज्य से हर्षित किया संसार,
लिया प्रभु ने जब श्री राम अवतार।

अधर्म और अन्याय का मचा था हाहाकार
किया अंत उन्होंने कंस अत्याचार,

अदभुत उनकी बाल लीला,अदभुत उनका रास,
पांडवों के साथ किया अधर्म का विनाश
धर्म की स्थापना की,बने तारणहार
अवतरित हुए प्रभु लेकर कृष्ण अवतार।

अहिंसा परमो धर्म का मार्ग हमें दिखाया,
शांति के आभूषण से धरा को सजाया,
सुख और वैभव का किया उन्होंने त्याग
धर्म की ख़ातिर चुन लिया वैराग,
कपिलवस्तु के थे वो राजकुमार
बौद्ध धर्म की स्थापना की लेकर बुद्ध अवतार।

अधर्म का जब होगा अति विस्तार
चारों ओर अन्याय से मचेगा हाहाकार,
पापियों का नाश होगा,धर्म का प्रकाश होगा
कलयुग का होगा अंत,सतयुग फिर से आएगा,
प्रभु के नए रूप से संसार धन्य हो जायेगा
शिव के इस आराधक के हाथ में होगी तलवार
प्रकट होंगे हरि, लेकर कल्कि अवतार।

❋

52. पाषाण

समय के साथ –साथ
कितना बदल गया है आदमी।
एक समय था जब
श्रद्धा और विश्वास से
पाषाण भी इंसान बन जाता था
और अब,
संवेदना से परे
जीता जागता इंसान
पाषाण बन जाता है।

❋

53. माँ

जीवन दुख की धार है, माँ है स्नेह बयार।
बरसे उनके नयन से, अश्रु के संग प्यार॥
ईश्वर ने हमको दिया, सुंदर-सा उपहार।
बिन माँ के सूना लगे, हम सब का घर-द्वार॥

राहें हैं काँटे भरी, माँ है कोमल फूल।
दया का सागर हैं वे, क्षमा करें हर भूल॥
ममता का भंडार है, देवी का है रूप
किरपा हो माँ की अगर, आए कभी न धूप॥

हम सब की माता धरा, ढोती सबका भार।
दोनों कर को जोड़कर, माने हम आभार॥

❋

54. अगरबत्ती बनाती लडकियाँ

बड़ी ही मेहनती
बड़ी ही समझदार होती हैं
अगरबत्ती बनाती लडकियाँ।
अपने टूटते – बिखरते घर का
आधार होती हैं
अगरबत्ती बनाती लडकियाँ।
मटमैले कपड़े, काले हाथ
और पसीने से तरबतर
फिर भी
बहुत ही पवित्र और ख़ुशबूदार होती हैं
अगरबत्ती बनाती लडकियाँ।
होती हैं वे अपाहिज पिता की लाठी
अपने छोटे –छोटे भाई –बहन के
सपनों को आँखों में बसाकर
दिन –रात अगरबत्ती की तरह
जलती रहती हैं।
शायद इसलिए
स्वयं किसी देवी का
साकार होती हैं
अगरबत्ती बनाती लडकियाँ।

❋

55. आभार

ईश्वर का माने आभार,
जिसने बनाया ये संसार।
सूरज, चाँद, हवा दी हमें
और दी नदियाँ की धार।
माता –पिता का माने आभार,
जिसने दिया हमें ढेरों प्यार।
उनकी सेवा की ख़ातिर
रहेंगे हम सदा तैयार।
विद्यालय का माने आभार,
दिया जिसने ज्ञान का भंडार।
ईश्वर के रूप में गुरुजन ने
सिखलाया जीवन का सार।
सेना का माने आभार,
सरहद पर सदा हैं तैयार।
देश की रक्षा के लिए
मृत्यु भी है उन्हें स्वीकार।

❋

56. संघर्ष

फूल हो गए हैं निढाल
पत्तों पर,
कुछ डाली से टूटकर
बिखरे हैं।
कुछ पानी से भीगकर
बेजान पड़े हैं
और कुछ अब भी
डाली से जुड़े रहने का
साहस कर रहे हैं।
बारिश की बूँदें बड़ी तेज थी
इसलिए खिले हुए फूल
संघर्ष करते –करते
पत्तों पर सो गए
और कुछ
इनसे लड़ने के लिए,
अपने पैरों पर
फिर खड़े हो गए।

❋

57. बरखा बहार

कारे बादर छा रहे, बरसे रस की धार।
आये लेकर साथ में, बूँदों का उपहार॥

हर्षित हुआ उदास मन, पवन चले चहुँ ओर।
काली बदरी देखकर, नाचे सुंदर मोर॥

बरखा की ऋतु आ गई, हर्षित है मन आज
हलधर हल की नोक से, छेड़ रहा है साज॥

बगियन में झूले पड़े, सखियाँ छेड़े तान
सावन की बौछार से, अधरों पर मुसकान॥

नदियाँ - पोखर भर गए, जल में उठी तरंग।
पिया मिलन की आस में, मन में भरी उमंग॥

❋

58. मेरे साथ चल

सुनो ना, ओ मेरी प्यारी ग़ज़ल,
मुसकाती रहना तुम हर पल।
तुम्हीं से है सारी ख़ुशियाँ मेरी,
कदम मिलाकर मेरे साथ चल।

प्रीत के रंग में रंग जाएँ
एक दूजे के हम हो जाएँ।
विश्वास की नन्हीं कलियों से
जीवन की बगिया महकाएँ।

प्यार ही प्यार भरा हो बस
ना हो किसी के दिल में छल।
तुम्हीं से है सारी ख़ुशियाँ मेरी
कदम मिलाकर मेरे साथ चल।

कभी धूप आए जो जीवन में,
तो छाया हम बन जायेंगे
विश्वास कभी न तोड़ेंगे
उसे उम्र भर हम निभायेंगे।

सच्चे अपने प्रीत के धागे
मन है गंगा -सा निर्मल।
तुम्हीं से है सारी ख़ुशियाँ मेरी,
कदम मिलाकर मेरे साथ चल।

चारों तरफ़ तन्हाई हो,

या गर्दिश में ठोकर खाई हो।
हर उलझन हम सुलझाएँगे,
एक दूजे से ना रुसवाई हो।

मिलकर करेंगे संघर्ष दोनों
हो जाएगी हर मुश्किल हल।
तुम्हीं से है सारी ख़ुशियाँ मेरी,
कदम मिलाकर मेरे साथ चल।

❋

59. लड़के

लड़के होते हैं
सरल और सहज
दिखावा करना
उन्हें कम ही आता है।
उनके पास नहीं होती
रंग-बिरंगी कलम
वे प्रश्न और उत्तर
लिखते हैं एक ही कलम से।
लड़के भूल जाते हैं
अक्सर
पेंसिल, रबड़, फुटपट्टी
और माँग कर
चला लेते हैं अपना काम।
लड़के बहन के
जन्मदिन पर
चोरी से लाते हैं
केक और उपहार।
संजोकर रखते हैं पैसे
रक्षाबंधन से पहले।
लड़के हिचकिचाते हैं
सभी के सामने सब कुछ
नहीं उगल पाते हैं।

लड़के हँसते हैं
दिल खोलकर लेकिन
अकेले में रोते हैं।
बहन के ससुराल जाकर
अदब से बतियाते हैं,
लड़के बहुत जल्दी
सयाने हो जाते हैं।

❋

60. ये मेरे हिस्से का एकांत है

जीवन की सूनी गलियों में
खिली - अनखिली कलियों में
यहाँ शोर नहीं, सब शांत है
ये मेरे हिस्से का एकांत है।

बिसरे रिश्तों का बंधन है
यादों का महकता चंदन है,
कुछ शिकवों के है पल मीठे
थोड़ा गुस्सा, थोड़ी अनबन है।

जो है सामने जी लो उसे
जीवन का यही सिद्धांत है,
यहाँ शोर नहीं सब शांत है
ये मेरे हिस्से का एकांत है।

जाने कैसी है उलझन
रूठा है मुझसे दर्पण
भाव बह गए, गीत अधूरे
और करूँ मैं क्या अर्पण।

संघर्ष के दिन भी बीतेंगे
निकट खड़ा अब निशांत है,
यहाँ शोर नहीं सब शांत है
ये मेरे हिस्से का एकांत है।

❋

61. ढलान मिल जाती है

बढ़ना है जिन्हें आगे उन्हें
असफलता कहाँ सताती है,
दौड़ने वाले व्यक्ति को
खुद ही ढलान मिल जाती है।

अवसर की तलाश में जो
न समय व्यर्थ बिताते हैं,
गर्दिश के दिनों में भी
साहस के गीत वे गाते हैं।

विषम स्थितियाँ ही उन्हें
और मजबूत बनाती हैं,
दौड़ने वाले व्यक्ति को
खुद ही ढलान मिल जाती है।

जीवन पथ पर मिलेगी अक्सर
विपदा भरी काँटों की राह,
जो चल दिया है उस पर
पूरी होगी उसकी चाह।

लगन और निष्ठा ही हमें
सफलता तक पहुँचाती है,
दौड़ने वाले व्यक्ति को
खुद ही ढलान मिल जाती है।

❋

62. उफ़ ये गर्मी

उफ़, ये गर्मी
उगलती है आग
पसीने से लथपथ तन
नहीं चलता दिमाग।
जितनो को कोसना था
मन भर के कोस लिया।
बढ़ते तापमान का
कितनों को दोष दिया।
आँगन, गली और रास्तों पर
बना दी सिमेंट की परतें।
रंग-बिरंगी, सुंदर –सुंदर
बिछा दी हैं फर्शें।
बारिश का पानी सारा
कैसे पहुँचे धरा के भीतर
वर्षा की बूँदें झरमर,
कैसे मिले शीतलता
सुबह, शाम और दोपहर।
घर से निकलते ही
पैर न गंदे हो जाएँ
जूते –चप्पल के संग–संग
मिट्टी न घर में आ जाए।

मिट्टी से बचने के लिए
पक्की फ़र्श हम बनवाते है।
फिर हाय गर्मी और उफ़ गर्मी का
गीत दुखी हो गाते हैं।

❋

आत्म परिचय

नाम : वंदना पंचाल

पिता : श्री संतप्रसाद शर्मा

माता : श्रीमती माधुरी शर्मा

पति : स्व. कमलेश शर्मा

पता : ४०/३, मंगल फ्लैट, आनंद फ्लैट के सामने, बापूनगर, अहमदाबाद, गुजरात - ३८००२४.

ईमेल : panchalbandanadcis@gmail.com

दूरभाष : 7016658542

जन्मतिथि : २३ जून १९६८, अहमदाबाद, गुजरात

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी), उर्दू सर्टिफिकेट कोर्स (गुजरात विश्वविद्यालय) बी.एड, यूजीसी नेट

संप्रति : हिंदी शिक्षिका, विभाग अध्यक्ष, दिवाइन चाइल्ड इंटरनेशनल स्कूल, नर्मदा केनाल के पास, अडालज, गांधीनगर, गुजरात

पुरस्कार :-

- शिक्षक दिवस पर एक्सीलेंस इन एज्युकेशन अवार्ड से सम्मानित
- कई साहित्यिक संस्थाओं द्वारा विविध सम्मान से सम्मानित
- काव्य लेखन और पठन स्पर्धा में प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित

प्रकाशित रचनाएँ एवं पुस्तकें :

- एकल काव्य संग्रह :- उम्मीद के सुमन खिलने दो (गुजरात हिंदी साहित्य अकादमी के अनुदान से प्रकाशित) सन २०२२
- बालगीत संग्रह :- कहनी है तुमसे कुछ बात (गुजरात हिंदी साहित्य अकादमी के अनुदान से प्रकाशित) सन २०२३
- एकल काव्य संग्रह :- उसके हिस्से की धूप (गुजरात हिंदी साहित्य अकादमी के अनुदान से प्रकाशित) सन २०२५
- साहित्य समर्पण साझा काव्य संकलन में रचनाएँ प्रकाशित
- नवल सखी संग्रह साझा काव्य संकलन में रचनाएँ प्रकाशित
- नवरंग सखी साझा काव्य संग्रह में रचनाएँ प्रकाशित
- धरा से गगन तक-२ साझा काव्य संकलन में रचनाएँ प्रकाशित
- विश्वकर्मा साहित्यकार :- जीवनवृत्त एवं श्रेष्ठ रचनाएँ साझा काव्य संकलन में रचनाएँ प्रकाशित

:: प्रकाशक ::

साहित्य सेतु अकादमी ट्रस्ट

ए-२०२, क्रिश लवकुशिया, शासन महादेव-३ के पास, केनरा बैंक के सामने, रनाल, अहमदाबाद-३८२४१२.

9788199201579